बाइबल के शब्द पृथ्वी पर पुत्र की ईश्वरीयता की झलक देते हैं

परमेश्वर द्वारा मनुष्यजाति की रचना के बाद कुछ अनुचित बात हुई। पुरुष व स्त्री ने अपनी इच्छा को पूरा करने का मार्ग चुन लिया और परमेश्वर द्वारा सुरक्षा चेतावनियों का अपमान किया। उनके इस पाप के कारण परमेश्वर से उनकी संगति टूट गई और उन पर मृत्यु का आतंक छा गया। परमेश्वर तथा आदम और हव्वा के बीच का मतभेद गहरा और चौड़ा था। इसके परिणाम काफ़ी दूरगामी थे वे हमें भी प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार से तेल निकालने की ड्रिलिंग मशीन में लगी चेन की प्रत्येक कड़ी तेल से सनी हुई होती है, उसी प्रकार मनुष्यजाति की प्रत्येक पीढ़ी पाप से सनी हुई है। यदि इसे बदला न जाता तो मनुष्यजाति का भाग मृत्यु ही था (रोमियों 5:12)। हम परमेश्वर से अलग थे और संसार में आशाहीन थे (इफिसियों 2:12)। परमेश्वर हमारी ओर से कार्य न करता तो सब कुछ नष्ट हो जाता।

प्रेम, दया और अनुग्रह के अविश्वसनीय प्रदर्शन में, परमेश्वर मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आया! उसने उस खाई को पार किया और पुल बनाया। उसने उस प्रेम के कारण कार्य किया जिसे लम्बाई-चौड़ाई, या उसकी गहराई से मापा नहीं जा सकता है। उसने जो कुछ किया वह न केवल अनापेक्षित था बल्कि उसका हमें कोई अधिकार भी नहीं था। कितनी शानदार, आनन्ददायक और जान डालने वाली खुशखबरी है! *दूसरी ओर, इसे गलत समझना कितना आसान है!* इस पाठ में हमारा विशेष उद्देश्य हमारे लिए परमेश्वर के कार्य को गहराई से समझना और उसके लिए उसका धन्यवाद करना है।

परमेश्वर के आने वाले मसायाह से जुड़ी पुराने नियम की बहुत सी प्रतिज्ञाएं और भविष्यवाणियां हैं। इनका पूरा होना यीशु के आने में देखा जाता है। यूहन्ना के लेखों के साथ नये नियम के पूरा होने के समय, कलीसिया और संसार पर यह प्रकट हो चुका था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र ही नहीं बल्कि परमेश्वर पुत्र भी था (यूहन्ना 1:1-14; 20:26-31)।

''परमेश्वर का पुत्र''

आवश्यक नहीं कि पुराने नियम या नये नियम में वाक्यांश ''परमेश्वर का पुत्र'' परमेश्वर का विचार ही हो। मूसा ने इस्राएलियों को यह कहते हुए सम्बोधित किया था, ''तुम अपने परमेश्वर की संतान हो।'' इस्राएली जानते थे कि वे स्वर्गीय जीव नहीं हैं, बेशक उन्हें ''परमेश्वर के पुत्र'' कहा जाता था। नये नियम में, हम यीशु को यह कहते हुए पाते हैं कि ''मेल कराने वाले'' लोग ''परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे'' (मत्ती 5:9)। यीशु के कथन से कोई भी यह नहीं मानता कि मेल कराने वाला कोई स्वर्गीय जीव है। इस प्रकार के बहुत से उदाहरणों में हम देखते हैं कि ''परमेश्वर के पुत्र [पुत्रों]'' का अर्थ पुराने या नये नियम में ईश्वर होना नहीं है। एक ही अपवाद है और यह अपवाद बहुत बड़ा है अर्थात जब इसे यीशु पर लागू किया जाता है।

यहां भी, हमें सचेत रहना चाहिए कि यीशु के जीवन काल के समय भी इस व्याख्या को लागू करने वाले बहुत से लोगों के मन में किसी भी प्रकार उसके परमेश्वर होने की बात नहीं होगी। इस्राएली जानते थे कि उनका इतिहास ऐसे लोगों से भरा पड़ा है जो परमेश्वर के मसायाह थे। ''मसायाह'' का अर्थ ''अभिषिक्त या चुना हुआ'' है। परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुआई और सम्भाल के लिए बहुत से अगुओं तथा राजाओं का अभिषेक किया था। कभी-कभी उन्हें ''परमेश्वर के पुत्र'' (भजन 89:20-29; 2 शमूएल 7:11ख-16) कहा जाता था। वास्तव में निर्गमन 4:22 और होशे 11:1 के अनुसार, इस्राएल जाति को सामूहिक तौर पर परमेश्वर का पुत्र कहा जाता था।

इसलिए इब्रानी/इस्राएली/यहूदी दिमाग में ''परमेश्वर का पुत्र'' वाक्यांश का गहरा महत्व था। इस्राएली उसके चुने हुए लोग थे। वे उसके परिवार के सदस्य थे। वे उसकी इच्छा को पाने वाले लाभकर्त्ता थे। ''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में इस्राएल एक बहुमूल्य विरासत मिली थी। ''परमेश्वर के पुत्रों'' के रूप में उनके बहुत से अगुओं तथा राजाओं को *याहवेह* के विशेष नियुक्त किए हुए माना जाता था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपनी सेवकाई के आरम्भ में धार्मिक अधिकारियों को तुरन्त संकेत दे दिया कि वह मसायाह नहीं था। बल्कि वह तो उसके लिए मार्ग तैयार कर रहा था। यूहन्ना ने यीशु को कभी मसायाह नहीं कहा, परन्तु ज़ोर देकर कहा कि उसके बाद आने वाला उससे बड़ा था और वास्तव में उससे पहले था। उसकी बातों से मसायाह के होने का अर्थ पता चला और यीशु के प्रभु होने की पुष्टि हुई (मत्ती 3:1-3; यूहन्ना 1:15, 19-23, 30)।

''राजा''

इसलिए, बपतिस्मा लेने के बाद, जब यीशु ने अपनी सेवकाई में प्रवेश किया, तो यह हैरानी की बात नहीं है कि उसे उस समय के बहुत से यहूदी राजा कहकर पुकारा करते थे। कइयों ने एक महान भविष्यवक्ता मानकर, राजा बनाना चाहा (यूहन्ना 6:14, 15)। अन्य पुकार उठे थे, ''धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है; ...'' (लूका 19:38; भजन

संहिता 118:26 भी देखिए)।

कुछ अन्यजाति भी राजा होने के पद की बातों से परिचित थे जो यीशु के जीवन और सेवकाई के आस पास होती थीं। उसके जन्म से पूर्व आए ज्योतिषी, जिन्हें फारस या अरब से आए अन्यजाति माना जाता है, ''यहूदियों के राजा'' जिसका जन्म हुआ था, को ढूंढ़ने के लिए आए थे (मत्ती 2:1, 2)। यीशु के जीवन के अन्त के निकट, रोमी हाकिम पीलातुस विशेषकर यीशु की ख्याति और उसकी स्वीकृति के प्रति दिलचस्पी लेता था कि वह मसायाह अर्थात राजा अर्थात परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 26:63, 64; यूहन्ना 18:37)। यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय, पीलातुस ने क्रूस पर एक चिह्न लगाने की आज्ञा दी; जिसमें लिखा था, ''यीशु नासरी यहूदियों का राजा'' (यूहन्ना 19:19)।

''मसायाह''

अपने जीवन काल में, यीशु को कुछ अन्यजाति और बहुत से यहूदी लोग परमेश्वर के अभिषिक्त राजा और पुत्र अर्थात ''मसायाह'' के रूप में देखते थे। यीशु ने स्वयं मसायाह होने को स्वीकार किया और जो उसे इस नाम से पुकारते थे उनकी बात को माना (मत्ती 16:16; यूहन्ना 1:49)। परन्तु जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को कभी मसायाह नहीं कहा, वैसे ही यीशु ने भी लगता है कि जान बूझकर अपनी सेवकाई के दौरान अपनी पहचान मसायाह के रूप में नहीं कराई। हो सकता है कि यह उसकी चलती रहने वाली सेवकाई की अपनी ''समय सारणी'' के कारण हो (मत्ती 16:20; 26:18; यूहन्ना 2:4; 7:6; 8:20; 17:1), या यह कि यहूदी लोग मसायाह की अपनी भविष्यवाणियों को उस पर लागू न कर पाएं। निश्चय ही यह इसलिए नहीं था क्योंकि वह ''मसायाह होने के बारे में सचेत'' नहीं था।[1]

यीशु का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किए गए इन शब्दों का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि इन्हें इस्तेमाल करने वाले लोग समझते थे कि यीशु परमेश्वर है। वास्तव में, यह अंगीकार कि यीशु परमेश्वर है, यीशु के सिवाय किसी और की ओर से केवल उसके पुनरुत्थान के बाद ही आया था। जब संदेह करने वाले थोमा ने यीशु के बेधे हुए शरीर को देखा और कहा, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!'' (यूहन्ना 20:28)। चरम आ गया था। पुनरुत्थान की विजय निर्णायक थी। यीशु की पूरी पहचान अब स्पष्ट हो चुकी थी। यीशु परमेश्वर है!

पाद टिप्पणियां

[1]जॉन ब्राइट, द किंगडम ऑफ़ गॉड (नैशविले: अबिंगडन प्रैस, 1953), 198-99.